करके देखा बनाम खोज आधारित शिक्षा

सीखना एक सतत प्रक्रिया है – यह शिक्षकों के लिए भी उतना ही सच है जितना कि शिक्षार्थियों के लिए। तो लाज़मी है, सीखने के इस अनन्त सफर में, सीखने-सिखाने और शिक्षण के तरीके भी बदलते होंगे, विकसित होते होंगे। इस लेख में भी, निधि साझा करती हैं कि कैसे शिक्षक बतौर उनके सफर में उनके शिक्षण का तरीका 'खुद करके सीखना' से 'खोज-आधारित सीखना' में बदल गया है। मगर क्या ये दोनों तरीके सर्वथा भिन्न हैं? इस बदलाव ने कैसे रूप लिया? और, विज्ञान शिक्षण की इस कक्षा में बच्चों व उनके शिक्षक ने और क्या-क्या सीखा? जानने के लिए पढ़िए सटीक उदाहरणों से भरपूर इस चिन्तनशील लेख को।

14

ग्लोब और बच्चे: भाग 2

"पृथ्वी गोल है।" शिक्षक कहते हैं। बच्चे 'हाँ' में सिर हिला देते हैं। मगर क्या वे सचमुच महज़ एक कथन से सपाट दिखती धरती से सुनी-सुनाई गोल पृथ्वी तक की अवधारणात्मक छलाँग लगा पाते हैं? ऐसे संशय के दौरान जब उनका परिचय बमुश्किल नसीब हुए ग्लोब से होता है तो कौतूहल की लहरें दौड़ पड़ती हैं! ग्लोब तो पेडस्टल पर टिका है, पृथ्वी किस पर टिकी है? पृथ्वी गोल है तो समुद्र का पानी क्यों नहीं गिर जाता? ग्लोब तो हम घुमाते हैं, पृथ्वी कौन घुमाता है? सवालों का शोर भारी है। अब ऐसे में, शिक्षक जी नहीं चुरा सकते। आखिर, शिक्षक क्या करते हैं? क्या वे बच्चों की जिज्ञासाओं को शान्त करते हुए अपने शिक्षण कर्तव्य को निभा पाएँगे? जानने के लिए पढ़िए, बच्चों और ग्लोब के रिश्ते पर आधारित प्रकाश कान्त का यह लेख।

55

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-99 (मूल अंक-156), जनवरी-फरवरी 2025

इस अंक में

05 | मच्छरों का युगल गीत
विपुल कीर्ति शर्मा

10 | वेल्क्रो के आविष्कार की कहानी
कल्याणी मदान

14 | करके देखा बनाम खोज आधारित शिक्षा
निधि सोलंकी

29 | कौओं के घोंसले और कोयल के अण्डे
माधव केलकर

33 | कौआ और कोयल: संघर्ष या सहयोग
कालू राम शर्मा

37 | बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान
मुकेश मालवीय

47 | गणित की भाषा और बच्चों का नज़रिया
महेश झरबड़े

55 | ग्लोब और बच्चे: भाग 2
प्रकाश कान्त

69 | घड़ी, तुम किताब हो न?
राजेश जोशी

75 | हमें गुदगुदी क्यों होती है?
सवालीराम

81 | संदर्भ इंडेक्स: अंक 151-156